VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
17 AUG 2024
No. 3
RECEIVED

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 2901)

Name of Candidate	SUSHMA SAGAR		
Medium Eng./Hindi	HINDI	Registration Number	1370539
Center	MN	Date	17-8-24

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	10	
5	10	
6	10	
7	10	
8	10	
9	10	
10	10	
11	15	
12	15	
13	15	
14	15	
15	15	
16	15	
17	15	
18	15	
19	15	
20	15	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **HINDI & ENGLISH.**
   इसमें बीस प्रश्न हैं **हिन्दी और अंग्रेजी** में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

For one-to-one mentoring session on this copy, call us at 7042691891 or send an email to appointment@visionias.in

1. मानव पूंजी का प्रभावी विकास और प्रबंधन भारत में संधारणीय संवृद्धि में कैसे योगदान दे सकता है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

How can effective development and management of human capital contribute to sustainable growth in India? (Answer in 150 words) 10

किसी भी देश की संधारणीय संवृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए धन, भूमि, आधारभूत संरचना के अलावा सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है - मानव पूंजी, जो अन्य पूंजियों के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करती है।

मानव पूंजी के प्रभावी विकास और प्रबंधन से भारत में संधारणीय संवृद्धि में योगदान

1) भारत सर्वाधिक आबादी वाला देश है जहाँ >60% जनसंख्या की आयु 35 वर्ष उससे कम है। ↓
कार्यशील जनसंख्या की बड़ी आबादी
↓
पर्याप्त कौशल व प्रशिक्षण
- PM कौशल विकास योजना
- स्टैंड अप इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया आदि
↓
अधिक आर्थिक गतिविधियाँ
संधारणीय संवृद्धि

2) बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएँ → बेहतर मानव संसाधन → रोजगार के नवीन अवसरों का उभरना (उदा.- इंफोसिस) → संधारणीय संवृद्धि

3) बेहतर मानव पूँजी → नवाचार को बढ़ावा
↓
उत्पादन में वृद्धि (उदा.- सूरवा/रोबोटिक्स)

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4) कमजोर व संवेदनशील वर्गों का सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकेगा जैसे - महिलाएं, वृद्ध, दलित, कृषक, LGBTQ, मजदूर आदि

समावेशी विकास

5) वर्तमान बदलती परिस्थितियों को देश के पक्ष में लाया जा सकता है eg= AI, IoT, रोबोटिक्स से रोजगार कम होने की संभावना को मानव पूंजी के विकास से समाप्त किया जा सकता है

6) मानव पूंजी का विकास → सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में समानता व विकास को बढ़ावा मिलता है।

@ 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य पूरा होगा

इसके लिए आवश्यक है -

1) R&D को बढ़ावा (अभी मात्र GDP का 0.6% व्यय)

2) शिक्षा, स्वास्थ्य मे निवेश को बढ़ावा देना (अभी शिक्षा मे GDP के 6% व स्वास्थ्य क्षेत्र मे व्यय नहीं) वैश्विक भुखमरी सूचकांक मे निम्न स्थान 111/125 देशों मे इस संबंध मे चुनौतियों को दर्शाता है

3) शारदा प्रसाद समिति के अनुरूप स्किल इंडिया प्रोग्राम की समस्याओं को दूर किये जाने हेतु कदम उठाए जाने चाहिए

4) लैंगिक समानता को बल (वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक मे भारत का निम्न स्थान - 129/146 वां)

इनके माध्यम से सिर्फ आर्थिक संवृद्धि के साथ ही समावेशी संवृद्धि के लक्ष्य को भी प्राप्त किया जा सकेगा।

2. वृद्धजनों द्वारा उनके जीवन को बेहतर बनाने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई विभिन्न सरकारी योजनाओं और पहलों तक पहुंचने एवं उनका लाभ उठाने में किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

What are the challenges encountered by the elderly in accessing and benefiting from various government schemes and initiatives aimed at improving their lives? (Answer in 150 words) 10

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 9% वृद्ध जनसंख्या है। इनके जीवन को बेहतर बनाने हेतु सरकार द्वारा विभिन्न सरकारी योजनाओं व पहलों का कार्यान्वयन किया जाता है जैसे- PM वय वंदना योजना, वयोश्री योजना, पेंशन योजना, SAGE प्रोग्राम आदि

वृद्धजनों द्वारा सरकारी योजनाओं व पहलों तक पहुँचने संबंधी चुनौतियां

1) जागरूकता का अभाव
   ↳ योजनाओं में भागीदारी ही नहीं कर पाते
2) डिजिटल डिवाइड व डिजिटल निरक्षरता
   ↳ यह डिवाइड ग्रामीण व शहरी वृद्धों में ही नहीं अपितु लैंगिक अनुपात में भी दिखता है (भारत में मात्र 31% महिलाएं मोबाइल का प्रयोग करती हैं जिसमें से मात्र 33% ही इण्टरनेट का उपयोग करती हैं) यह अनुपात वृद्ध महिलाओं के संबंध में तो अधिक गहन है।
3) शारीरिक अक्षमता
4) परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा वृद्धों हेतु

सक्रिय कदम न उठाना।
5) सरकारी जटिल प्रक्रियाएँ
6) अधिकारियों में संवेदनहीनता की कमी → बड़ी मात्रा में पेंशन संबंधी याचिकाएँ निरस्त होना।
7) पितृसत्तात्मक समाज में वृद्ध जनसंख्या जिसमें लैंगिक अनुपात महिलाओं के पक्ष में है, महिलाओं को समाज में सक्रिय भागीदारी से रोकता है।

वृद्धजनों (योजनाओं का) द्वारा लाभ उठाने में चुनौतियाँ

1) भ्रष्टाचार
2) परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उसका उपभोग किया जाना
3) लालफीताशाही
4) पेंशन योजनाओं के तहत प्रदत्त राशि वर्षों से मुद्रास्फीति के अनुरूप परिवर्तित नहीं की गई है।
5) सरकारी योजनाएँ अधिकतर शारीरिक समताओं पर बल देती हैं किंतु अध्ययन के अनुसार लगभग 40% वृद्धों में मानसिक अवसाद पाया जाता है, इस पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

साथ ही डिजिटल डिवाइड को कम किया जाना, द्वार पर शासन, संवेदनशीलता, पेंशन की मात्रा को बढ़ाना, ऐसे अधिक अवसर उत्पन्न करना जिससे वे अपने अनुभव से अधिक लाभ कमा सकें, संयुक्त परिवार को बढ़ावा देने वाले मूल्यों को बढ़ावा देना तथा वृद्धों से संबंधित कानूनों का बेहतर से क्रियान्वयन आदि पर भी बल देना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. भारत में चक्रीय प्रवासन मेजबान और स्रोत, दोनों क्षेत्रों को कैसे लाभ पहुंचाता है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

How does circular migration in India bring benefits to both the host and source regions? (Answer in 150 words) 10

विदेश मंत्रालय के अनुसार, विश्व में भारतीय प्रवासियों की संख्या सबसे अधिक लगभग 3.2 करोड़ है। इसमें चक्रीय प्रवासन की भी प्रवृत्ति देखी जाती है।

चक्रीय प्रवासन से मेजबान क्षेत्र को लाभ

1) आर्थिक विकास को बढ़ावा
   e.g. USA में कई MNCs के विकास में भारतीय प्रवासियों की भूमिका e.g. सत्य नडेला, सुंदर पिचई आदि।
2) रोजगार के विभिन्न अवसरों का सृजन
3) देश में नवाचार को बढ़ावा
   e.g. भारत से ब्रेन ड्रेन का लाभ विकसित देशों को होना
   ↓
   union को बढ़ावा
4) देश में अन्य देशों की संस्कृतियों से सामाजिक संस्कृति व मेट्रोपोलिटन संस्कृति का विकास e.g. UK में होली व दिवाली मनाना।
5) स्रोत देश के साथ संबंधों में सुधार
   e.g. UAE-भारत संबंध
6) मेजबान देश की संस्कृति को बढ़ावा

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

चक्रीय प्रवासन से स्रोत देश को लाभ

1) विप्रेषण
eg- भारत को 2023 में = $125 बिलियन का विप्रेषण प्राप्त हुआ।
2) स्रोत देश की संस्कृति का अन्य देशों मे प्रसार → सॉफ्ट पावर
eg- भारत के बॉलीवुड, योग, भाषा के प्रति बढ़ता लगाव
3) देश मे नवाचार को बढ़ावा
4) तकनीकी हस्तांतरण
5) मेजबान देश से संबंधो मे सुधार
डायस्पोरा, देश के राजदूत के रूप मे कार्य करते है।
6) वैश्वीकरण को बढ़ावा।

हालांकि इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रवासन के दौरान होने वाले मानवीय व आर्थिक शोषण को कम किया जाए। (eg अरब देशों में) पर्याप्त कौशल प्रदान कर व पर्याप्त शिक्षा के बाद प्रवासन सुनिश्चित किया जाए। देश में ऐसी संभावनाएं विकसित करना जिससे ब्रेन ड्रेन न हो eg- विश्वविद्यालयों में आधारभूत संरचना व निवेश को बढ़ावा देना, R&D को बढ़ावा देना, देश में गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर सृजित करना।

अतः चक्रीय प्रवासन दोनों देशों को लाभ पहुँचाता है किंतु इसे समावेशी व धारणीय बनाना इसे वसुधैव कुटुम्बकम के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल बनाएगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. सोशल मीडिया के उदय ने भारत में सांप्रदायिक सद्भाव को कैसे प्रभावित किया है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

How has the rise of social media impacted communal harmony in India? (Answer in 150 words) 10

सांप्रदायिकता का अर्थ है किसी धर्म या संप्रदाय द्वारा अपने हितों हेतु अन्य धर्म या संप्रदायों के हितों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करना जिससे आंतरिक वैमनस्य व हिंसा को बढ़ावा मिलता है। वर्तमान में इसे सोशल मीडिया द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रभावित किया जा रहा है।

सोशल मीडिया के उदय से सांप्रदायिक सद्भाव पर नकारात्मक प्रभाव

1) अफवाहों की बढ़ती संख्या → अविश्वास बढ़ा
2) बड़ी संख्या में लोगों के जुड़े होने के कारण दंगों से संबंधित जानकारी वृहद स्तर पर → बड़े स्तर पर हिंसा
e- मुजफ्फरपुर दंगे, दिल्ली दंगे आदि
3) डीप फेक व AI का दुरूपयोग करके जानबूझकर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने वाले वीडियो तथा तस्वीरों का प्रचार
4) एल्गोरिद्म ऐसी होती है कि व्यक्ति को उसकी पसंद की ही कंटेंट बार बार रिकमेंड होती है जिससे सामान्य विचार अतिवादी विचारों में बदल जाते

5) लोगों तक सूचना पहुँचाना आसान
eg- ISIS चीफ द्वारा लोगों का ब्रेनवाश हेतु सोशल मीडिया का उपयोग
6) डार्क वेब की बड़ी मात्रा (~90%)
7) सुरक्षा एजेंसियों द्वारा ट्रेस किया जाना कठिन व जवाबदेही सुनिश्चित करना कठिन हो जाता है। (अनामिता के कारण)
8) हिंसा को बढ़ावा देने हेतु अनैतिक व अनुचित जानकारी का भण्डार
eg-लोन वुल्फ अटैक का बढ़ना।

सोशल मीडिया द्वारा सांप्रदायिक सद्भाव पर सकारात्मक प्रभाव

1) वैश्वीकरण को बढ़ावा → धार्मिक पहचान से अधिक वैश्विक मानव की पहचान को बढ़ावा मिलना
सांप्रदायिक सद्भाव ↑ ←

2) जाँच एजेंसियां व सरकारें सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने हेतु लोगों की पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग।

3) क्षेत्रीय अच्छे उदाहरणों को वैश्विक स्तर पर स्वीकृति मिलती है → लोगों में अन्य सम्प्रदाय के प्रति प्रेम व सहिष्णुता का विकास होता है।

सोशल मीडिया मात्र एक माध्यम है इसका उपयोग सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने या समाप्त करने हेतु किया जाए यह इसके उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है अतः जड़ों से इस समस्या को दूर करने के लिए सार्वभौमिक मूल्यों जैसे प्रेम, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता पर बल देना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. भारत में, जहां संतान पैदा करना परंपरागत रूप से चॉइस का विषय नहीं रहा है, स्पष्ट कीजिए कि क्यों कई सारे विवाहित जोड़े निःसंतान रहने का विकल्प चुन रहे हैं। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

In India, where having a child has not traditionally been a matter of choice, explain why a growing number of married couples are opting to remain childless. (Answer in 150 words) 10

भारत में विवाह संस्था व इससे जुड़ी प्रक्रियाएँ जैसे - संतति का पैदा करना, परंपरागत रूप से व्यक्तिगत नही अपितु पारिवारिक संस्था से जुड़े विषय रहे है अर्थात् इससे संबंधित निर्णयों में व्यक्तिगत चाइस पर अधिक बल नही दिया जाता। वही दूसरी ओर कई विवाहित जोड़ो द्वारा निःसंतान रहने का विकल्प भी चुना जा रहा है।

विवाहित जोड़ो द्वारा निःसंतान रहने का विकल्प चुनने का कारण

1) वर्तमान मे व्यक्तिवादिता अर्थात व्यक्तिगत स्वतंत्रता व निर्णयों को बढावा मिला है।

2) संयुक्त परिवारो से एकल परिवारो का बढता प्रचलन

3) महिलाओं का सशक्तिकरण → उनकी परिवार नियोजन हेतु निर्णयो मे बढती भूमिका → महिलाएँ अनुचित दबावों के बिना व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अनुरूप निर्णय लेने में सक्षम

4) सोशल मीडिया का बढता प्रयोग → अनेक उदाहरण विवाहित जोड़ो की

प्रोत्साहित करते हैं।

5) सुरक्षित गर्भ निरोधक उपायों की उपस्थिति।

6) करियर को प्राथमिकता दी जाना

7) भारत में पाश्चात्य संस्कृति व विचारों को बढ़ावा मिलना।

विवाहित जोड़ों द्वारा आपसी सहमति से नि:संतान रहने का विकल्प, बिना अनुचित दबाव के उनकी निजता व गरिमापूर्ण जीवन जीने की स्वतंत्रता के अनुरूप ही है।

भारत में अभी यह विकल्प का चुना जाना अत्यंत ही सीमित है अत: ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है कि देश की परम्परागत ढांचा कमजोर हुआ है। हालांकि इसे मात्र फैशन के रूप में नहीं अपनाया जाना चाहिए। या मात्र सोशल मीडिया के प्रभाव से। यह व्यक्तिगत निर्णयों के अनुरूप होना चाहिए। दोनों पक्षों की सहमति होनी चाहिए व महिलाओं की शारीरिक स्वायत्तता को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि वे अपने अनुकूल निर्णय पाने में सक्षम हों।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. भारत में सामाजिक न्याय और समता सुनिश्चित करने में प्रधान मंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पी.एम. स्वनिधि) योजना की प्रभावकारिता पर टिप्पणी कीजिए। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

Comment on the efficacy of Prime Minister Street Vendor's AtmaNirbhar Nidhi (PM SVANidhi) scheme in ensuring social justice and equity in India. (Answer in 150 words) 10

PM स्वनिधि (PM स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि) का संबंध स्ट्रीट वेंडर्स अर्थात् सड़क पर रहने वाले या फेरी वालों वेंडर्स के सामाजिक न्याय व समता को स्थापित करने व इनके सशक्तिकरण से संबंधित है।

PM स्वनिधि योजना : सामाजिक न्याय व समता

1) कोरोना महामारी का सर्वाधिक दुष्प्रभाव स्ट्रीट वेंडर्स पर देखा गया
   ↳ रोजगार के अवसरों का समाप्त होना
   ↓
   PM स्वनिधि द्वारा ₹10,000 रुपए की सुविधा
   ↓
   पुनः अपनी संरचना को अवस्थित कर सके।

स्वनिधि I

2) निवेश को बढ़ावा → अधिक उत्पादन
   ↓
   बेहतर जीवनस्तर ← लाभ ↑

3) कौशल विकास →
   ↳ क्षमता सुधार
   ↳ उत्पादकता में वृद्धि

4) स्वरोजगार को बढ़ावा
↳ परिवार की स्थिति मे सुधार
↳ शिक्षा, स्वास्थ्य मे निवेश।
मानव संसाधन का विकास

PM स्वनिधि योजना के कार्यान्वयन से संबंधित चुनौतियां

1) जागरूकता की कमी
2) फण्ड की समस्या → बजट मे कम आबंटन, आवश्यकता के अनुरूप नही
3) लाभार्थियों में एक्सक्लूजन की त्रुटि
4) ऋण की राशि अपर्याप्त है।
5) कार्यान्वयन मे कमी
6) भ्रष्टाचार व लालफीताशाही → लाभ रिसकर पहुँचता है। व प्रक्रियाएँ जटिल है।
7) स्ट्रीट वेंडर्स के संस्थागत विकास व समावेशी विकास पर अधिक बल दिए जाने की आवश्यकता।

अतः इसके संबंध मे जागरूकता को बढ़ावा देने के साथ ही प्रक्रियाओं को सरल किया जाना चाहिए ताकि स्ट्रीट वेंडर्स आसानी से इसका लाभ उठा सके। डिजिटल डिवाइड को कम कर इसका लाभ सभी तक किया जाए। प्रशासन के सभी स्तरों पर कमजोर वर्ग के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना होगी सामाजिक न्याय व समता वास्तविक रूप से स्थापित किए जा सकेंगे।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

7. भारतीय परिवार व्यवस्था में श्रम विभाजन के पैटर्न के अंतर्गत आए बदलावों पर चर्चा कीजिए। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

Discuss the changes in the pattern of division of labour in the Indian family system. (Answer in 150 words) 10

विभिन्न आधुनिक मूल्यों के समाजीकरण की प्रक्रिया में समावेशित होने से भारतीय परिवार व्यवस्था में श्रम विभाजन के पैटर्न में बदलाव देखे जा सकते है।

भारतीय परिवार व्यवस्था में श्रम विभाजन के पैटर्न में आए बदलाव

परम्परागत पैटर्न	दिखते नवीन बदलाव
1) महिलाओं की आर्थिक प्रक्रियाओं में भागीदारिता का अभाव / मात्र घरेलू जीवन से संबंधित गतिविधियों का संचालन	1) महिलाओं की आर्थिक क्षेत्र में बढ़ती भागीदारिता (≈25%) उदा.- सुधा मूर्ति, किरण मजूमदार, नीति हरिनाय आदि
2) पुरुषों की घर की बाहरी आर्थिक क्रियाओं पर बल	2) पुरुषों की घरेलू कार्यों में बढ़ती भूमिका
3) परिवार की बच्चियों को घर के काम व छोटे भाई-बहनों की देखभाल का कार्य	3) शिक्षा पर बल दिया जाना।

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परम्परागत पैटर्न	नवीन बदलाव
4) बाल विवाह व बाल श्रम की उपस्थिति	4) बालकों के सर्व शिक्षा अभियान के तहत शिक्षा पर बल
5) वृद्धों की श्रम क्षेत्र मे कम भागीदारिता	5) वर्क फ्रॉम होम, सोशल मीडिया के माध्यम से अपने अनुभवों को साझा करना, ट्यूब आदि का प्रोफेशन के रूप मे बदला

श्रम विभाजन मे आए इस पैटर्न के बदलावों को और अधिक संधारणीय व समावेशी बनाए जाने की आवश्यकता है -

1) महिलाओं पर दोहरे कार्य का बोझ
   - शारीरिक व मानसिक अवसाद
   - कार्य क्षमता मे कमी
   - यौन हिंसाएँ विशेषकर कार्यक्षेत्रों मे भी पु- प- बंगाल बलात्कार मामला, हैदराबाद रेप केस आदि

2) बाल श्रम हेतु PENCIL पोर्टल, सर्व शिक्षा अभियान, बचपन बचाओ आंदोलन को और अधिक मजबूत करने की जरूरत

3) वृद्धों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जाए।

श्रम विभाजन के इस बदलते पैटर्न मे श्रम की गरिमा, मानवाधिकारों का रक्षण व संधारणीयता ही इससे सर्वजन हिताय के लक्ष्य को पूरा करने मे मदद कर सकती है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

8. भारतीय समाज में पंथनिरपेक्षीकरण से उत्पन्न होने वाले सामाजिक परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

Throw light on the social changes arising out of secularization in the Indian society. (Answer in 150 words) 10

पंथनिरपेक्षीकरण से तात्पर्य है- राज्य का अपना आधिकारिक धर्म न होना, सभी धर्मों के प्रति तटस्थ रहना व नागरिकों के धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार को सुनिश्चित करना।

भारतीय समाज में पंथनिरपेक्षीकरण से उत्पन्न होने वाले सामाजिक परिवर्तन

1) समाज में अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता का विनाश → राष्ट्र की एकता व अखण्डता
   ex- श्रीलंका में एक ही धर्म को बढ़ावा देने के कारण अन्यों में आंतरिक वैमनस्य व संघर्ष की स्थिति।

2) अल्पसंख्यकों के मध्य भयहीन वातावरण व सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा
   ex- सुलह-ए-कुल जैसे त्योहार मुस्लिम-हिंदू एकता के प्रतीक

3) अधिकारों के हनन पर न्यायपालिका द्वारा सभी के मौलिक अधिकारों की संरक्षा की जाना ex- अनु. 32, 226
   ↓
   न्यायपूर्ण समाज की स्थापना

4) धार्मिक सांप्रदायिकता का विनाश सामाजिक स्तर के बजाय राजनीतिक

स्तर के प्रयासों व ध्रुवीकरण आदि में रिक्तता है। ए- चुनावों के दौरान हेट स्पीच के माध्यम से समाज में ध्रुवीकरण का प्रयास।

5) विविधता में एकता - भारत में विविधता की समृद्धता को पंथनिरपेक्षता के कारण ही समाज एकजुट है व लगातार होने वाले परिवर्तनों के प्रति सामंजस्यपूर्ण है।

6) महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है
- ए- तीन तलाक का मुद्दा
- सबरीमाला मुद्दा
- शाहबानो वाद आदि।

7) समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी अल्पसंख्यकों की संस्कृति का संरक्षण व समय के बदलाव के साथ नित्य परिवर्तनों को स्वीकार किया जाना ए- Art 25, 29, 30 आदि के अंतर्गत।

पंथनिरपेक्षता से जहाँ एक ओर भारत ने सर्वधर्म समभाव को बढ़ावा दिया है वहीं युक्तियुक्त प्रतिबंध जैसे - कानून व्यवस्था, नैतिकता, मानवीय गरिमा आदि के आधार पर उचित हस्तक्षेप से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तनों को भी बढ़ावा दिया है ए- महिलाओं की स्थिति में सुधार।

इन परिवर्तनों को संवैधानिक नैतिकता के अनुरूप ही सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि लोकतंत्र के वृहत्तम व सफलतम रूप को अक्षुण्ण रखा जा सके।

9. हाल ही में शुरू की गई पी. एम. जनमन (PM-JANMAN) योजना विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) के समक्ष आने वाले मुद्दों के समाधान में क्या भूमिका निभा सकती है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

What role can the recently launched PM-JANMAN scheme play in addressing the issues faced by the Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs)? (Answer in 150 words) 10

PVTGs के सर्वांगीण विकास के लिए PM-जनमन को कार्यान्वित किया गया है ताकि सामाजिक न्याय व समता स्थापित की जा सके।

PVTG के समक्ष आने वाले मुद्दे	PM JANMAN की समाधान के रूप में भूमिका
- आर्थिक पिछड़ापन की समस्या है	- रोजगार के अवसरों की वृद्धि पर बल eg- वनाधारित उत्पादों के संबंध में कौशल विकास (eg- वन धन योजना) - क्षेत्राधारित परम्परागत ज्ञान का आर्थिकीकरण को बढ़ावा
- शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ापन	- शैक्षिक आधारभूत ढांचे को बढ़ावा देना (eg- एकलव्य मॉडल स्कूल)
- स्वास्थ्य समस्याएँ eg- एनीमिया, सिकल सेल एनीमिया, कुपोषण आदि	- प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं पर बल - स्वास्थ्य में आधारभूत ढांचे का निर्माण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

	4- सिकिल सेल एनीमिया उन्मूलन कार्यक्रम, पोषण अभियान, अस्पतालों को बनावा देगा
- आधारभूत सुविधाओं जैसे स्वच्छ जल, सड़क, आवास स्वच्छता आदि की कमी	- इनसे संबंधित सभी योजनाओं के क्रियांवयन पर बल देगा तथा क्रियांवयन में सभी हितधारकों को शामिल करना 4- जल जीवन मिशन - स्वच्छ भारत अभियान

भारत में 75 PVTG समूह है जो विकास की प्रक्रिया से पिछड़ गए है अतः PM जनमन के माध्यम से समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सकता है इसके लिए आवश्यक है-

1) योजनाओं के क्रियांवयन को गंभीरतापूर्वक व संवेदनशीलता के साथ पूर्ण, मिशन मोड में समयबद्ध ढंग से पूर्ण किया जाए।
2) जनजातिय समूहों की संस्कृति को अक्षुण्ण रखा जाए।
3) क्रियांवयन में सभी हितधारकों को शामिल किया जाए।
4) सर्वोत्तम मॉडल का पालन
5) अधिक आबंटन जिससे फंड की समस्या नहीं
6) परिणामोन्मुख अप्रोच का पालन

अतः PM जनमन का बेहतर क्रियांवयन, प्रस्तावना में प्रस्तावित सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय के लक्ष्य को PVTG के संदर्भ में पूर्ण कर सकता है।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. जलवायु परिवर्तन भारत में हाशिए पर रहने वाले जाति-आधारित समूहों को कैसे प्रभावित करता है? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

How does climate change impact caste-based marginalised groups in India? (Answer in 150 words) 10

IPCC की AR6 रिपोर्ट बताती है कि जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों पर, तथा विकसशील देशों में भी, उच्च वर्ग के अपेक्षा हाशिए पर रहने वाले समूहों पर अधिक होता है।

जलवायु परिवर्तन का भारत में हाशिए पर रहने वाले जाति आधारित समूहों पर प्रभाव

1) हीट वेव की बढ़ती दर (वैश्विक तापन के कारण) → अनौपचारिक क्षेत्र के मजदूरों जिसमें जाति आधारित हाशिए पर रहने वाले समूहों की संख्या अधिक है, पर नकारात्मक प्रभाव → कार्यक्षमता में कमी → कम आय → मृत्यु (उचित सुरक्षा उपायों के अभाव के कारण)

2) सामाजिक सुरक्षा का अभाव → जलवायु परिवर्तन (CC) के दुष्प्रभावों का दूरे परिवार पर नकारात्मक प्रभाव → इंश्योरेंस के अभाव व अधिक मानसून से फसल का नष्ट होना

3) गरीबी में वृद्धि → वैश्विक तापन से गेहूँ की उत्पादकता में कमी → कम उत्पादन → कम आय → गरीबी ↑

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4) स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अधिक
   eg- महामारी का दुष्प्रभाव इन पर अधिक
5) सुरक्षित उपायों तक पहुँच का अभाव
   eg- AC, HYV बीज, सूक्ष्म सिंचाई तंत्र आदि।
6) इनमे बचत का अभाव होता है अतः जलवायु परिवर्तन से होने वाला कोई भी दुष्प्रभाव इन्हे संवेदनशील बना देता है।
7) अवैध स्थानो जैसे नदियो के बाढ क्षेत्र मे स्लम के रूप मे निवास → बाढ का दुष्प्रभाव

जलवायु परिवर्तन सभी पर प्रभाव डालता है किंतु सुरक्षित उपायों व आवश्यक शील्ड के अभाव के कारण वे इन दुष्प्रभावों से अधिक प्रभावित होते है अतः आवश्यकता है -
- जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन व शमन पर बल।
→ जाति आधारित भेदभाव व हिंसा को कम करना (eg- NCRB की हालिया रिपोर्ट के अनुसार 2022 मे 2021 की तुलना मे SC पर हिंसाओं की संख्या मे लगभग 13% की वृद्धि हुई है)।
जातिगत सामाजिक बहिष्कार को समाप्त करके बेहतर समतापूर्ण समाज का निर्माण किया जाना जिससे CC के दुष्प्रभावों को कम किया जा सकेगा। (सभी के संयुक्त प्रयासो से)
→ CC के दुष्प्रभाव जाति से अधिक उससे उत्पन्न असमानता व वंचना के कारण उत्पन्न होते है अतः समावेशी विकास SDG के लक्ष्यों की प्राप्ति के लक्ष्यों (लक्ष्य-1, 2, 13 आदि) को पूरा कर सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

11. क्या आपको लगता है कि अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 ने वन निवासी समुदायों को ऐतिहासिक अन्याय से मुक्त करने और वनों के प्रबंधन को लोकतांत्रिक बनाने के अपने वादे को पूरा किया है? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Do you think that The Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 has delivered on its promise of freeing forest dwelling communities from historical injustices and democratising governance of forests? (Answer in 250 words) 15

ऐतिहासिक अन्याय को समाप्त करने व जनजातियों के सशक्तीकरण व उत्थान के लिए 2006 में ST व OFD (वन अधिकारों की मान्यता) अधि॰लाया गया था।

2006 के इस अधि॰ की प्रभावकारिता

1) इसके तहत जनजातियों को निम्न के आधार पर स्वामित्व के अधिकार दिए गए थे
- यदि ST वर्ग से संबंधित है
- कम से कम 75 वर्ष से (~3 पीढ़ियां) उस पर कृषि आदि गतिविधियों में संलग्न हो।

↓

परम्परागत भूमि पर स्वामित्व का अधिकार, इनके ऐतिहासिक अन्याय को दूर करता है।

2) स्वामित्व प्राप्त भूमि को बेचा नहीं जा सकता। मात्र पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण किया जा सकता है। यह अवैध रूप से भूमि हरण को

समस्या को दूर करता है।

3) इस क्षेत्र से संबंधी निर्णयों में लोगों की भूमिका को सुनिश्चित करता है।

4) गैर वनीय समुदायों के अनुचित हस्तक्षेप व शोषण पर पर्याप्त सुरक्षा हेतु उपाय किए गए हैं।

5) सांस्कृतिक संरक्षण व परम्परागत ज्ञान की अक्षुण्णता पर बल दिया गया है।

6) वनीय उत्पादों पर अधिकारों को मान्यता प्रदान किए जाना।

7) क्षेत्रीय ग्राम सभा को निर्णय निर्माण से संबंधित वृहद अधिकार प्रदान किए जाना।

2006 के अधि॰ के कार्यान्वयन से संबंधित चुनौतियां

1) के स्तर पर याचिकाओं को निरस्त किये जाना

- जागरूकता के अभाव में कागजों में छोटी-छोटी त्रुटियों के आधार पर योग्यता का निरस्तीकरण

- किसी दस्तावेज में ममता व किसी दस्तावेज में ममता देवी या नाम के लिखने में अंतर जैसी त्रुटियों के आधार पर

आवश्यकता है कि अधिकारियों द्वारा बेहतर व सही दस्तावेजों के निर्माण के लिए

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इन्हें जागरूक किया जाए व मदद किया जाए तभी ऐतिहासिक अन्याय दूर होगा।

2) संवेदनशीलता का अभाव
3) प्रकृत (एक्सक्लूजन) के साथ ही गलत लाभार्थियों के इन्क्लूजन की त्रुटि होना।
4) जनजातियों मे जागरूकता का अभाव
5) आधारभूत ढाँचे मे कमी → फण्ड की समस्या।
6) अभी भी टॉपड्डाउन बॉटम अप्रोच का पालन (निर्णय निर्माण मे)
7) कानून के लूपहोल्स का प्रयोग कर शोषण का जारी रहना
8- परम्परागत ज्ञान का पेटेंट आदि

उपाय
→ जागरूकता मे वृद्धि
→ अधिकारियों की संवेदनशीलता पर बल
→ जनजातियों की उचित मदद की जाए जिससे वे अपने अधिकारों प्राप्त कर सकें। ये इनका अधिकार है सरकार द्वारा प्रदत्त मदद नहीं
→ फण्ड को बढ़ावा
→ संस्कृति का संरक्षण

2006 का अधि॰ अनु 38 के तहत प्रदत्त लोगों के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए राज्य को दिए गए निर्देशो का उचित पालन का उदाहरण दिखा लेकिन इसका वास्तविक पालन इनकी चुनौतियों को दूर कर न्याय स्थापित करने से ही होगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

12. शहरी और ग्रामीण भारत में गरीबी एवं भुखमरी के मुद्दे किस प्रकार भिन्न हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

How do the issues of poverty and hunger differ in urban and rural India? (Answer in 250 words) 15

वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2024 में भारत 125 देशों में 111वीं स्थान पर है जो देश में भुखमरी की समस्या को दर्शाता है वहीं मानव विकास सूचकांक HDI में भारत 193 देशों में 134 वें स्थान पर है जो गरीबी जैसी समस्या को दर्शाता है। ये गरीबी व भुखमरी जैसे मुद्दे सम्पूर्ण भारत में समान नहीं है इनमें शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर भी भिन्नता देखी जाती है।

शहरी भारत में गरीबी व भुखमरी संबंधी मुद्दे

शहरी भारत में गरीबी संबंधी मुद्दे

1. स्लम में आधारभूत सुविधाओं का अभाव
2. श्रम कानून का पालन बेहतर रूप से न होना → कंपनी द्वारा [illegible] का उपयोग निम्न वर्ग हेतु नहीं
3. → मुद्रास्फीति जनित गरीबी
   eg- ~~स्वास्थ्य~~ हेडलाइन इन्फ्लेशन
4. ↓ भुखमरी व कुपोषण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(5) निम्न वर्ग में यूनियनों का अभाव
eg- मॅनुअल स्कैवेंजर्स में संलग्न लोग
- घर के कार्यों में लगी महिलाओं
आदि रोजगारों में शहरों में यूनियनों का अभाव ↓
शोषण को बढ़ावा

शहरी भारत में भुखमरी संबंधी मुद्दे

(1) हेडलाइन इन्फ्लेशन के तहत खाद्य पदार्थों की मुद्रास्फीति का अधिक प्रभाव

(2) पोषणीय भोजन की कमी
eg- गेहूँ व चावल पर ही बल

(3) जंक फूड के कारण हिडन हंगर
↓
उचित पोषण न मिलना
↓
शारीरिक व मानसिक विकास प्रभावित

(4) ↓ बेरोजगारी

गरीबी का कुचक्र ↓ भुखमरी की समस्या

ग्रामीण भारत में गरीबी व भुखमरी संबंधी मुद्दे

गरीबी संबंधी मुद्दे

(1) → बेरोजगारी विशेषकर प्रच्छन्न बेरोजगारी अतः उत्पादकता के अनुरूप परिणाम नहीं

(2) मौसमी बेरोजगारी → कृषि के पैटर्न

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के आधार पर गरीबी का चक्र दिखता है।

(3) रोजगार के अवसरों की कमी →
शहरी पलायन → नगरीकरण

(4) कृषि का महिलाकरण किंतु महिलाओं पर स्वामित्व अधिकार न होने के कारण ऋण व निवेश की सुविधा प्राप्त न होना

(5) शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी व गुणवत्ता का अभाव

ग्रामीण क्षेत्र में भुखमरी की समस्या

1) ~86% किसान सीमांत व लघु कृषक है
↳ ऋण की समस्या
↳ कम उत्पादन
} → भुखमरी की स्थिति उत्पन्न होना

2) पोषण में विविधिकरण की कमी
3) बेरोजगारी
4) आधारभूत ढांचे की कमी → मानवीय संसाधन का अभाव

भुखमरी ← निम्न जीवन स्तर

अतः सरकार को पोषण अभियान, मनरेगा कार्यक्रम, PM आत्मनिर्भर भारत योजना मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, शहरी स्वरोजगार योजना, जननी सुरक्षा योजना, पोषण वाटिका, कौशल विकास योजना, मेक इन इंडिया, रूर्बन मिशन, AMRUT मिशन, स्मार्ट सिटी इंडिया आदि कार्यक्रमों के बेहतर व समयबद्ध कार्यान्वयन पर बल देना चाहिए ताकि भारत @2047 तक विकसित बन सके।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

13. भारत में ट्रांसजेंडर शिक्षा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा कीजिए। इन मुद्दों के समाधान हेतु उपाय सुझाइए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Discuss the issues related to transgender education in India. Suggest measures to address these issues. (Answer in 250 words) 15

प्रस्तावना में निहित लक्ष्य सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय को प्राप्त करने में ट्रांसजेंडर शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत में ट्रांसजेंडर शिक्षा से संबंधित मुद्दे

1) समावेशिता का अभाव
   - शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सामाजिक बंचन की स्थिति के कारण, भागीदारिता में कमी देखी जाती है।

2) पहुँच का अभाव (Accessibility)
   - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में कमी
   - समाज में पूर्ण स्वीकार्यता की कमी

3) वहनीयता (Affordability)
   - कौशल विकास से संबंधित शिक्षा।
   - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में

4) समाज मे पूर्वाग्रहों की उपस्थिति
↳ शोषणापरक व भेदभावपूर्ण व्यवहार

5) शिक्षण संस्थानो में संवेदनशीलता की कमी। अनुचित नामो से चिढाया जाना
↓
आत्मविश्वास मे कमी आता है
शिक्षा के प्रति हतोत्साहित होते है।

6) आधारभूत ढांचे का अभाव
7) जागरूकता की कमी
8) ट्रांसजेंडर की शिक्षा व शिक्षा मे ट्रांसजेंडरसों को पर्याप्त महत्व का अभाव दिखता है।
9) ट्रांसजेंडर शिक्षा को बढावा देने के लिए NGO व सिविल सोसाइटी की सीमित भूमिका।

समाधान हेतु उपाय

1) शैक्षिक किताबो में ट्रांसजेंडर शिक्षा व मुद्दो मे विस्तृत रूप से शामिल किया जाना चाहिए ताकि आरंभ से ही समाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चों को संवेदनशील व जागरूक बनाया जा सके।
2) शिक्षण संस्थानो मे होने वाले भेदभावो

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- शोषणपरक अवधारणों को रोकना
- कठोर दण्ड का प्रावधान

3) शिक्षा संबंधी उपलब्धता, गुणवत्ता व वहनीयता को सुनिश्चित किया जाए।
4) ट्रांसजेंडर संबंधी न्यायालय के निर्णय जैसे नालसा वाद आदि के क्रियान्वयन पर बल।
5) ट्रांसजेंडर्स की सामाजिक स्वीकार्यता को बढ़ाने में NGO, सिविल सोसाइटी आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
6) शिक्षण संस्थानों में आरक्षण सुनिश्चित करना।
7) शिक्षण संस्थानों ही नहीं रोजगार में भी अवसरों हेतु आरक्षण देना जिससे वे शिक्षा हेतु प्रोत्साहित होंगे।
8) ट्रांसजेंडर शिक्षा से संबंधित R&D को बढ़ावा व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दिए जाए।

इन कदमों के द्वारा ही वास्तविक रूप से अनु. 14 के तहत प्रदत्त समता के अधिकार हेतु विधियों का समान संरक्षण हेतु विशेष कदम उठाए जा सकते हैं। ट्रांसजेंडर शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर समाज को अधिक न्यायपूर्ण बना सकती है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

14. धर्म और वैश्वीकरण पारस्परिक रूप से एक मजबूत संबंध साझा करते हैं। भारतीय समाज के संदर्भ में चर्चा कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Religion and globalization share a mutually reinforcing relationship. Discuss in the context of Indian society. (Answer in 250 words) 15

वैश्वीकरण का तात्पर्य है - घरेलू अर्थव्यवस्था का विश्व के विभिन्न स्तरों पर अंतर्संबद्धीकरण का बढ़ना। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने धर्म को भी प्रभावित किया है व धर्म ने भी वैश्वीकरण पर प्रभाव डाला है।

वैश्वीकरण का धर्म पर प्रभाव व मजबूत संबंध

1) विभिन्न धर्मों के आदर्शों व मूल्यों के प्रति प्रचार व जागरूकता में वृद्धि
eg- वैश्वीकरण के कारण वैश्विक स्तर पर धार्मिक गुरुओं द्वारा आभासी सम्मेलन व प्रचार प्रसार करना

2) धर्म के कोर मूल्यों की जगह बाहरी कर्मकाण्डों में वृद्धि
eg: भारत में ऑनलाइन पूजा करना, तर्पण करना

3) सोशल मीडिया के कारण धार्मिक गुरुओं में बढ़ोत्तरी eg- सतनामी सम्प्रदाय, राधे माँ, बाबा राम रहीम आदि।

4) कई धर्म गुरुओं को वैश्विक स्तर पर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

पहचान मिली है थ- आचार्य प्रशांत, राधास्वामी सम्प्रदाय आदि।

5) धर्म एक आर्थिक गतिविधि के रूप में उभरा है।

6) वैश्वीकरण के कारण बढ़ते मानसिक अवसाद व संबंधों के टूटने के कारण धर्म की महत्ता पर बल दिया जाना

7) वैश्विक अतिवादी धार्मिक विचारों का भारत में बढ़ावा
थ- केरल के युवकों का ISIS में शामिल होने की घटना संबंधी मुद्दा

8) सांप्रदायिक दंगों में वृद्धि
9) लोन वुल्फ अटैक की बढ़ती संख्या
10) धार्मिक अतिवादी विचारों के कारण भारत में आतंकवाद की समस्या।

धर्म का वैश्वीकरण पर प्रभाव व मजबूत संबंध

1) भारतीय धर्म व दर्शन 'वसुधैव कुटुम्बकम' की शिक्षा देता है जो कि स्वयं में ही वैश्वीकरण का आधार है।

2) धर्म, प्रेम, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता की शिक्षा देता है स्वामी विवेकानंद

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अतः मानव को विश्व मानव बनाता है।

3) धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया जाता है
eg- ईसाई धर्म मिशनरियां

4) धर्म वैश्वीकरण की प्रक्रिया को समावेशी व न्यायपूर्ण बनाने पर बल देता है।

5) धर्म अप्रत्यक्ष रूप से देशों के मध्य संबंधों में सुधार करने का कार्य करता है (धार्मिक कूटनीति).
eg- भारत में बौद्ध धर्म के आधार पर श्रीलंका, जापान के साथ संबंध कम्बोडिया
- हिंदू धर्म के आधार पर नेपाल आदि के साथ बेहतर संबंध

इस प्रकार वैश्वीकरण व धर्म पारस्परिक रूप से मजबूत संबंध साझा करते हैं। आवश्यकता है कि दोनों के द्वारा एक दूसरे का प्रयोग समाज के वृहद लाभ के लिए किया जाए न कि अपने संकुचित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए। तभी वास्तविक अर्थों में धर्माधारित वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा को साकार किया जा सकेगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. क्या आपको लगता है कि भारत में त्योहारों के व्यावसायीकरण ने इन आयोजनों के सामाजिक महत्त्व को कम कर दिया है? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Do you think that commercialisation of festivals in India has overshadowed the social significance of these events? (Answer in 250 words) 15

भारत त्यौहारो का देश है जहाँ प्रत्येक अवधि मे किसी न किसी आर्थिक या सामाजिक गतिविधि या समरसता को मनाने हेतु विभिन्न त्यौहारो का आयोजन किया जाता रहा है।

त्यौहार, वृहद रूप में सामाजिक व आर्थिक महत्व रखते है किंतु वहीं इनका व्यावसायीकरण भी विभिन्न मुद्दे उत्पन्न करता है।

त्यौहारो के व्यावसायीकरण द्वारा इनके सामाजिक महत्व पर प्रभाव

1) त्यौहारो के आयोजन में विभिन्न प्रकार के निवेशो का जुडना
ex- दीवाली पर दियो के बजाय लाईटिंग पर बल दिया जाना
↓
गरीब व संवेदनशील वर्ग में वंचना की भावना

2) त्यौहारो के वास्तविक मूल्यों व गहरे अवधारणा के स्थान पर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

बाहरी कर्मकाण्डों पर ही बल।
↳ दुर्गा पूजा हमें महिला सशक्तिकरण का संदेश देता है। वहीं महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा (NCRB की हालिया रिपोर्ट के अनुसार 2022 में 2021 की तुलना में महिलाओं पर होने वाली हिंसा में लगभग 4% की वृद्धि हुई है), बलात्कार के मामले (कोलकाता रेप केस आदि) आदि स्थिति की गंभीरता को दर्शाते हैं।

3) भावनात्मक संबद्धता का अभाव
↳ त्यौहारों को सोशल मीडिया पर दिखावा के आधार पर मनाना।

4) स्वास्थ्य पर प्रभाव
↳ गरीब वर्ग बेहतर खाद्यान्न तक पहुँच न होना
↳ सुरक्षित रंगो की कीमत अधिक होना व रासायनिक रंगो की उपलब्धता के कारण स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव

5) पर्यावरण पर प्रभाव
↳ दीवाली व न्यूइयर पर पटाखे → वृद्ध व रोगी व जानवरों पर नकारात्मक प्रभाव

6) त्यौहारों के दौरान नशा व जुआ आदि के प्रति झुकाव का बढ़ना
↳ महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव

7) त्यौहारों के मूल्यों के स्थान पर ग्राण्ड सेलेब्रेशन को बढ़ावा

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

8) हालांकि भारत में देखी जाने वाली उपर्युक्त चुनौतियाँ सीमित व नियंत्रण योग्य है अतः आवश्यकता है कि त्यौहारों के सामाजिक महत्व को बनाए रखने के लिए निम्न कदम उठाए जाए

1) परिवार के बड़े सदस्यों द्वारा बच्चों को त्यौहार के मूल्यों व शिक्षा की जानकारी देना।

2) त्यौहारों की ग्रांड सेलेब्रेशन की जगह उनका उपयोग आपसी सद्भावना को बढ़ावा देने हेतु किया जाए ॰ ईद के दौरान खीर बांटना, दीवाली के दौरान मिठाई आदि।

3) त्यौहारों का आयोजन समावेशी हो जिससे समाज के किसी वर्ग पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े ॰ - गरीब, महिला, बच्चे, जानवर, या पर्यावरण का अन्य कोई घटक।

4) देश के संसाधनों का उपयोग करना ॰ - दीवाली लाइटस का बहिष्कार जिससे दिये आदि को बढ़ावा मिलने से कमजोर वर्गों के हित सुनिश्चित होगा।

5) कानून-व्यवस्था सुदृढ़ की जाए ताकि त्यौहारों की शुचिता बनी रही व हिंसक घटनाओं में कमी आए।

त्यौहार भारत की धरोहर व सांस्कृतिक विविधता के दर्पण है अतः इनका महत्व भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने की दृष्टि से अतुलनीय है।

16. भारत में गरीबी और शिक्षा के बीच संबंध का विश्लेषण कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Analyse the relationship between poverty and education in India. (Answer in 250 words) 15

गरीबी व शिक्षा एक दूसरे से अत्यंत गहन रूप से अंतर्संबंधित तत्व है जो एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव डालते हैं।

भारत मे गरीबी का शिक्षा पर प्रभाव

1) गरीबी → कम आय → भोजन, आवास व स्वास्थ्य पर व्यय

↑ निम्न जीवन स्तर

↑ बेरोजगारी ← शिक्षा पर कम व्यय

2) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच का अभाव।

ASER रिपोर्ट - कक्षा 5 के छात्र कक्षा 3 की पुस्तक नही पढ़ पाते। इसी तरह आधारभूत गणितीय क्षमता का अभाव (NIPUN मिशन)

3) • परिवारों के सदस्यों विशेषकर बच्चों को शिक्षा की जगह श्रम क्रियाओ मे लगा दिया जाता है → बालश्रम को बढ़ावा (PENCIL पोर्टल

बचपन बचाओ आंदोलन, सर्व शिक्षा अभियान आदि)

4) महिला शिक्षा पर प्रभाव
गरीब → कम आय → अतः शिक्षा में पुत्रों को वरीयता (2011 के जनगणना पुरुष साक्षरता दर - 82%
महिला " = 65%)

5) गरीब → पोषण की समस्या
NFHS-5 - भारत में 5 वर्ष से कम के 36% बच्चे स्टंटिंग, 19% बेस्ट वेस्टिंग व 32% बच्चे अल्पभार से ग्रसित है।
↓
शारीरिक व मानसिक विकास में कमी
↓
शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन न करना
↓
पढ़ाई छोड़ देना। (>90%)

6) उदाहरण - केरल में उच्च शिक्षा के स्तर के साथ गरीबी का निम्न स्तर (उच्च HDI इंडेक्स) वहीं बिहार में निम्न शिक्षा का स्तर (<60%) के साथ ही वहाँ HDI इंडेक्स में निम्न प्रदर्शन का रिश्ता

भारत में शिक्षा का गरीबी पर प्रभाव

1) अशिक्षा → रोजगार के सीमित अवसर → गरीबी

2) अशिक्षा → कम आय वाले रोजगार (सामाजिक विकास की कमी) → गरीबी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3) शिक्षित समाज → बेहतर व्यापार विकास → रोजगार के अवसरों का सृजन → गरीबी↓
eg- स्टार्टअप्स

4) शिक्षित समाज → अधिकारों के प्रति जागरूकता → समाज में गरीबी कम करने हेतु सरकार पर दबाव → गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम
eg- मनरेगा

5) अधिकारों के प्रति जागरूकता का प्रसार

6) शिक्षा शोषण व गरीबी के कुचक्र से लड़ने का साहस व आत्मविश्वास प्रदान करती है। eg. डॉ अम्बेडकर, अब्दुल कलाम आदि

NITI आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पिछले 9 वर्षों में लगभग 25 करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं इसमें भारत में लगातार बढ़ते शिक्षा के स्तर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसके साथ ही SDG के लक्ष्य 1, 2 (शून्य गरीबी, शून्य भुखमरी) की प्राप्ति के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि "गरीबी मात्र धन की कमी नहीं अपितु अवसरों व अधिकारों से वंचना भी है"

↳ अमर्त्य सेन

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

17. क्या सवेतन मासिक धर्म अवकाश का प्रावधान भारत में कार्यस्थल पर बेहतर कार्यबल भागीदारी और लैंगिक समावेशिता में योगदान दे सकता है? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Can the provision of paid menstrual leave contribute to better workforce participation and gender inclusivity at workplace in India? (Answer in 250 words) 15

WB की रिपोर्ट के अनुसार यदि महिलाओं की भी पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी सुनिश्चित की जाए तो इससे भारत की GDP में लगभग २७% की वृद्धि हो सकती है। इसी भागीदारी को बढ़ाने के लिए सवेतन मासिक धर्म अवकाश पर भी विचार किया जा रहा है।

सवेतन मासिक धर्म अवकाश : बेहतर कार्यबल भागीदारी व लैंगिक समावेशिता में योगदान

1) महिलाओं को कार्यबल भागीदारी हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।
2) यह महिलाओं के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता को दर्शाता है।
3) महिलाओं की कार्यक्षमता व उत्पादकता में वृद्धि आ सकती है।
4) महिलाओं के मासिक धर्म के दौरान होने वाली शारीरिक पीड़ा से

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

राहत पहुँच प्राप्त हो सकती है। घर पर बेहतर देखभाल के माध्यम से।

5) यह महिलाओं में आत्मविश्वास का संचार करेगा।

6) यह श्रम की गरिमा के अनुरूप है।

7) अभी कंपनियों द्वारा मासिक धर्म व गर्भावस्था के कारण उनके उत्पादकता में कमी के कारण भर्ती या आवेदन के प्रति संवेदनहीनता दर्शायी जाती है जिससे आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी घटती है। सवेतन अवकाश का प्रावधान इस विवेकाधीन व अनुचित व्यवहार की जगह योग्यता को महत्व देगा।

किंतु इसके साथ ही

निम्न बातों पर भी ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि कार्यस्थल पर बेहतर कार्यबल भागीदारी व लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा मिले

1) मात्र सवेतन अवकाश के उपाय से ही कार्यस्थल पर कार्यबल भागीदारी नही बढ़ेगी अपितु इसका बेहतर कार्यान्वयन भी सुनिश्चित किया जाए।

2) महिलाओं में इसके प्रति

जागरूकता का प्रसार करना

3) यौन स्थल पर होने वाली हिंसाओं को रोकने हेतु 2013 के अधिनियम का भलीभांति रूप मे कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।

4) कार्यस्थल पर श्रमिको के साथ योग्यता के अनुरूप व्यवहार होना चाहिए न कि लिंग के अनुसार। तभी ग्लास सीलिंग को तोड़कर महिलाएँ उच्च पदो पर जा सकेगी।

5) महिलाओं हेतु मूलभूत सुविधाओं को सुनिश्चित करना यथा- शौचालय, विश्राम गृह, स्तनपान गृह, क्रेच सुविधाएं/ सवेतन मासिक धर्म अवकाश के साथ उपर्युक्त उपायो के साथ महिलाओं के कार्यस्थल को मानवीय व अधिक लैंगिक समावेशी बनाया जा सकेगा।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

18. भारत में विद्यमान सामाजिक अपवर्जन पर वैश्वीकरण के प्रभाव की विवेचना कीजिए। इसके परिणामस्वरूप अपवर्जन के नए रूप कैसे सामने आते हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Discuss the impact of globalization on existing social exclusions in India. How does it result in new forms of exclusion? (Answer in 250 words) 15

वैश्वीकरण का तात्पर्य है देश की अर्थव्यवस्था का विश्व के विभिन्न स्तरों पर अंतर्संबद्धता को बढ़ावा देना। 1991 के सुधारों के बाद से भारत में वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला है जिसका प्रभाव विद्यमान सामाजिक अपवर्जन पर भी देखा जा सकता है।

भारत में विद्यमान सामाजिक अपवर्जन पर वैश्वीकरण का प्रभाव

1) वैश्वीकरण ने जातिगत भेदभाव को वर्गगत भेदभाव में बदला है (caste based to class based)

2) कुछ जातियों को परंपरागत रोजगार व उद्यमों से संबद्ध कर दिया गया था वहीं वैश्वीकरण ने रोजगार के अवसरों में विविधीकरण को बढ़ावा।

3) ऑनलाइन शिक्षा → निम्न वर्गों हेतु शिक्षा के अवसर

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4) महिलाओं की अपवर्जन के स्थान पर सशक्तीकरण को बढ़ावा मिला।
स्व-रोजगार में बढ़ती भूमिका
— सैन्य बलों मे महिलाओं की भागीदारिता (आर्मी मे स्थायी कमीशन आदि)

5) नगरीकरण को बढ़ावा → जातिगत अपवर्जन की जगह है अर्थात जातीय अस्मिता मे कमी आई है।

6) LGBTQ जैसे समूहो के प्रति बढ़ती जागरूकता व सचेतना पर भी वैश्वीकरण के सामाजिक आंदोलन व विचारों का प्रभाव बढ़ा है। साथ ही समलैंगिकता आदि पर भी सामाजिक स्वीकार्यता बढ़ी है।

7) आदिवासी संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है व-मधुबनी पेंटिंग्स, वर्ली पेंटिंग्स आदि।

वैश्वीकरण के कारण अपवर्जन के स्वरूप व उनके कारण

1) धन व संसाधन आधारित अपवर्जन को बढ़ावा। वैश्वीकरण ने गरीबों-अमीरों के अंतर के अंतराल को और बढ़ाया है जिससे गरीबो का अपवर्जन बढ़ा है (oxfam रिपोर्ट)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2) क्षेत्रीय संस्कृतियो पर वैश्विक संस्कृति का प्रभाव → सामान्यीकरण की प्रवृत्ति बढ़ना eg- A&N की 70,000 साल पुरानी बो भाषा का विलुप्त होना।

3) महिलाओ के प्रति नवीन सामाजिक अपवर्जन दिखता है eg- वस्तुकरण की प्रवृत्ति बढ़ना
eg - पोर्नोग्राफी , फिल्मे आदि।

4) विकसित देशो द्वारा विकासशील देशो मे सामाजिक संदर्भों मे अपवर्जन को बढ़ावा देना जिससे सामाजिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के बेहतर लाभो को अपनाए जाने से परम्परागत रूप मे सामाजिक अपवर्जन को कम किया जा सकता है आवश्यकता है कि यह प्रक्रिया पूर्ण रूप से संप्रभु व विकसित देशो के स्थान पर लोकतंत्रीकरण के अनुरूप हो जिससे सामाजिक अपवर्जन को दूर कर न्यायपूर्ण व समतापूर्ण समाज की स्थापना की जा सके।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

19. स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में क्षेत्रीय पहचान की उत्पत्ति का आधार क्या था? बाद के दशकों में आर्थिक कारकों ने क्षेत्रवाद को कैसे प्रभावित किया? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

What was the basis of formation of regional identities in the early years of independent India? How did economic factors in the later decades influence regionalism? (Answer in 250 words) 15

भारत में पर्याप्त क्षेत्रीय विविधताओं की उपस्थिति क्षेत्रीय पहचान को निर्मित करने का आधार बनती है।

स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक वर्षों में क्षेत्रीय पहचान की उत्पत्ति का आधार

1) भाषा → इसी संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों में भाषायी आंदोलन देखने को मिले फलस्वरूप 1953 में भाषा के आधार पर आंध्र-प्रदेश का गठन हुआ। फलस्वरूप महाराष्ट्र, गुजरात, प. बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक जैसे राज्यों का गठन भाषा के आधार पर हुआ।

2) ऐतिहासिक अनुभव →

(जैसे मैसूर राज्य से कर्नाटक व मद्रास राज्य से तमिलनाडु के निर्माण के पीछे भाषा के साथ इनका ऐतिहासिक अनुभव भी था जिसने इन्हें क्षेत्रीय ईकाई के रूप में एकीकृत किया)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3) क्षेत्रीय संस्कृतियाँ - किसी क्षेत्र मे पाई जाने वाली चित्रकला, स्थापत्य कला, आदि ने भी क्षेत्रीय पहचान को बनाये दिया है -
दक्कन क्षेत्रों मे वेसर मंदिर निर्माण शैली
उत्तरी क्षेत्रों मे नागर शैली व
दक्षिणी क्षेत्रों मे द्रविड़ शैली आदि।

4) धार्मिक पहचान → स्वतंत्रता के साथ धर्म के आधार पर देश का विभाजन हुआ ऐसे में धार्मिक पहचान भी क्षेत्रीय पहचान का मुद्दा बनी है - प. बंगाल, पंजाब, कश्मीर आदि।

बाद के दशकों में आर्थिक कारकों द्वारा क्षेत्रवाद को प्रभावित करना

1) राज्यों के मध्य आर्थिक पिछड़ापन पहचान का कारण बना है - बिहार, राजस्थान, UP, MP आदि राज्यों को बीमारू राज्यों की संज्ञा देना।

2) आर्थिक आधार पर राज्यों का विभाजन व नए राज्यों का निर्माण है - झारखण्ड, उत्तराखण्ड आदि राज्यों का निर्माण

2901
VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

3) वर्तमान में भी आर्थिक कारकों ने उत्तर-दक्षिण के वाद-विवाद को बढ़ावा दिया है
द०-राज्यों का आरोप है कि उनके द्वारा करों का अधिक भुगतान का वाद उत्तरी राज्यों को दिए जाना।

4) आर्थिक पिछड़ेपन के कारण भारत का उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र वंचन के कारण एकल इकाई के रूप में नए पहचान को धारण किया है।

5) इसी तरह हरित क्रांति के आर्थिक लाभों ने भी देश में क्षेत्रवाद को बढ़ावा दिया है अतः हरित क्रांति 2.0 के तहत पूर्वी राज्यों में इसे बढ़ावा देने पर बल दिया जा रहा है।

6) बुंदेलखण्ड जैसे क्षेत्रों की पहचान आर्थिक सूखे के कारण उत्पन्न आर्थिक पहचान से मजबूत हुई है।

आर्थिक के साथ धार्मिक, भाषाई, सांस्कृतिक विविधता आदि भी आज भी अपनी पहचान बनाए हुई है आवश्यकता है कि क्षेत्रीय संस्कृति की विविधता को संरक्षित करते हुए राष्ट्र की एकता व अखण्डता को अक्षुण्ण रखा जाए।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

20. भारतीय शहरों की सामाजिक-आर्थिक संरचना और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर शहरी फैलाव(Urban Sprawls) के प्रभाव की विवेचना कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

Discuss the impact of urban sprawls on the socio-economic fabric and environmental health of Indian cities. (Answer in 250 words) 15

जनगणना 2011 के अनुसार भारत की लगभग 32% जनसंख्या नगरों में निवास करती है। साथ ही लगातार बढ़ते नगरीकरण से भारतीय शहरों की सामाजिक आर्थिक संरचना व पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ा है।

शहरी फैलाव का भारतीय शहरों की सामाजिक आर्थिक संरचना पर प्रभाव

सकारात्मक	नकारात्मक
→ जातीय अस्मिता कमजोर हुई है।	→ स्लम की समस्या
— महिलाओं की आर्थिक क्षेत्र में भागीदारिता बढ़ी है।	→ गरीबी - अमीरी का अंतराल चौड़ा होता जाना
→ आर्थिक क्षेत्र में रोजगार से संबंधित अवसरों में वृद्धि	→ कुपोषण की समस्या
	→ गरीबी का दुश्चक्र पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है

सकारात्मक

- शहर, आर्थिक संवृद्धि के इंजन के रूप में उभरते।
- LGBTQ जैसे समूहों को शहरी समाज में अधिक स्वीकार्यता व अधिकारों के प्रति अधिक सजगता।
- बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएँ सुविधाएँ आदि

नकारात्मक

- महिलाओं पर कार्य का दोहरा बोझ
- कार्यस्थल पर महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा
- सामुदायिक देखभाल
- संबंधों में दूरी एकल परिवार
- भावनात्मक संबंधों की कमी (तलाक की बढ़ती संख्या)

शहरी फैलाव का पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर प्रभाव

सकारात्मक

- पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति अधिक जागरूकता
- शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय आंदोलन बढ़ेंगे।

नकारात्मक

- पर्यावरण के प्रति भौतिकवादी व भोगवादी संस्कृति का बढ़ना
- शहरी विस्तार हेतु विखंडीकरण

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

सकारात्मक	नकारात्मक
संबंधित NGOs व सिविल समाज की सक्रिय भूमिका - दबाव समूह के रूप में सरकार पर पर्यावरण के पक्ष में नीति निर्माण पर बल	- असंधारणीय जीवन शैली - अत्यधिक वाहनों का प्रयोग - वायु प्रदूषण - जल का व्यर्थ उपयोग → जलस्तर में कमी - शहरों का हीट स्पॉट के रूप में विकसित होना - बाढ़ की समस्या आधारभूत ढाँचे का टूट जाना - दिल्ली में कोचिंग संस्थान में बारिश 3 छात्रों की मृत्यु

नगरीकरण की प्रक्रिया को और अधिक संधारणीय व समावेशी बनाए जाने की आवश्यकता है इसके लिए सामाजिक न्याय व समता के साथ ही पर्यावरणीय नैतिकता को वास्तविक रूप से कार्यान्वित किए जाने की आवश्यकता है तभी शहर वास्तविक रूप में समावेशी स्वरूप को धारण कर पाएंगे।